चिकित्सा ज्योतिष

*डॉ. सुशीला सारस्वत

हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार कालावधि पर आधारित कर्म के तीन भेद हैं– पारब्ध, संचित तथा क्रियमाण। पाप कर्मों का प्रारब्ध मानव को दुःख रोग तथा कष्ट प्रदान करता है। किसी व्यक्ति के पारब्ध को ज्योतिषशास्त्र तथा योगसमाधि द्वारा जाना जा सकता है। उसमे योगसमाधि जी कि अष्टांग योग का उत्कृष्तम अंग है, करोडौ मनुष्यों में किसी बिरले साधक को ही सिद्ध हो पाती है। इस समाधि के सिद्ध होने से वह साधक संसार की घटनाओं के भूत, भविष्य, वर्तमान को प्रत्यक्ष देखता है। इसीलिए ऐसे महापुरुष त्रिकालदशी महात्मा कहलाते हैं। प्रारब्ध को जानने का जी दूसरा साधन है वह है फलित ज्योतिष। ज्योतिषशास्त्र में जन्म कुंडली, वर्ष कुंडली प्रश्न कुंडली, गोचर तथा सामूहिक शास्त्र की विधाएँ व्यक्ति के प्रारब्ध का विचार करती हैं, उसके आधार पर उसके भविष्य के सुख–दुख का आंकलन किया जा सकता है।

चिकित्सा ज्योतिष में इन्ही विधाओं के सहारे रोग निर्णय करते हैं तथा उसके आधार पर उसके ज्योतिषीय कारण को दूर करने के उपाय भी किये जाते हैं। इसलिए चिकित्सा ज्योतिष को ज्योतिष द्वारा रोग निदान की विद्या भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे मेडिकल ऐस्ट्रॉलॉजी कहते हैं। इसे नैदानिक ज्योतिषशाख तथा ज्योतिषीय विकृतिविज्ञान भी कहा जा सकता है। यद्यपि चिकित्सा ज्योतिष नया शब्द है तथा इसका नाम भी नवीन है, परन्तु इस विषय पर आयुर्वेद तंत्र, सामुद्रिक ज्योतिषशास्त्र तथा पुराणों में पुष्कल सामग्री उपलब्ध है। प्राचीनकाल में ग्रन्थ सूत्ररूप में तथा तथा लोकबद्ध लिखे जाते थे। प्रस्तुत विषय से सम्बद्ध बहुत सा साहित्य मुगल काल में मतान्ध शासकों तथा सैनिकों ने नष्ट कर दिया है. जो कुछ बचा है वह भी प्रकृति प्रकोप तथा जीव–जन्तुओं के आधात से नष्ट हो गया।

प्राचीन समय में सभी पीयूषपाणि आयुर्वेदीय चिकित्सक ज्योतिषशास्त्र के जाता होते थे और वे किसी भी गम्भीर रोग की चिकित्सा से पूर्व ज्योतिष के आधार पर रोगी के आयुष्य तथा साध्यासाध्यता का विचार किया करते थे। जिसका आयुष्य ही नष्ट हो चुका है उसकी चिकित्सा से कोई लाभ नहीं होता। ष्श्रीमददेवीभागवत महापुराण में एक कथा आई है जिसके अनुसार महर्षि कश्यप को जब यह ज्ञात हुआ कि राजा परीक्षित की मृत्यु सर्पदंश से

होगी तब महर्षि ने सोचा कि मुझे अपनी सर्पविद्या से राजा परीक्षित के प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। महर्षि कश्यप उस काल के ख्याति प्राप्त षविष वैज्ञानिक थे। महर्षि ने

राजमहल की और प्रस्थान किया, मार्ग में उन्हें तक्षक नाग मिला जी राजा परीक्षित को इसने जा रहा था। तक्षक ने ब्राहाण का वेष बनाकर कश्यप से पूछा, भगवान् आप कहाँ जा रहे हैं ? कश्यप ने उत्तर दिया मुझे जात हुआ है कि राजा परीक्षित की मृत्यु तक्षक के दश से होगी, मैं अपने अगद प्रयोग द्वारा राजा के शरीर को विष रहित कर दूँगा जिससे धन और यश की प्राप्ति होगी। तक्षक अपनी उदम् वेष त्यागकर वास्तविक रूप में प्रकट हो गया और कहा, ष्मैं इस हरे–भरे वृक्ष पर देश का प्रयोग कर रहा हूँ। है महर्षि। आप अपनी विद्या का प्रयोग दिखाएँ। और तक्षक के विष प्रयोग से उस वृक्ष की कृष्ण वणे और शुष्क प्रायः कर दिया। महर्षि कश्यप ने अपने अगद प्रयोग से उस वृक्ष को पूर्ववल हरा–भरा कर दिया। यह देखकर तक्षक के मन में निराशा हुई। तब तक्षक नै महर्षि कश्यप से निवेदन किया कि, आपका उपचार फलदायी तभी होगा जब राजा का आयुष्य शेष होगा। यदि वह गतायुष हो गया है तो आपको अपने कार्य में यश प्राप्त नहीं होगा। काश्यप ने तत्काल ज्योतिष गणना करके पता लगाया कि राजा की आयु में कुछ घड़ी शेष हैं। ऐसा जानकर वे अपने स्थान को लौट गए। लक्षक के उससे विष की संस्कृत में तक्षकिन् कहते हैं। आजकल का अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द Toxin उससे व्युत्पन्न हुआ। इस घटना की तरह पुराणों में अनेक घटनाओं का वर्णन है। जिनसे यह जात होता है कि प्राचीन वैद्य रोग निदान एवं साध्यासाध्यता के लिए पढ़ें–पदे ज्योतिषशाख की सहायता लेते थे।

योग–रत्कार में कहा गया है कि औषधं मंगलं मंत्रों, हयन्याच विविधाः क्रिया। यस्यायुस्तस्य सिध्यन्ति न सिध्यन्ति गतायुषि।

अर्थात औषध, अनुष्ठान, मंत्र यंत्र तंत्रादि उसी रोगी के लिये सिद्ध होते हैं जिसकी आयु शेष होती है। जिसकी आयु शेष नहीं हैरू उसके लिए इन क्रियाओं से कोई सफलता की आशा नहीं की जा सकती। यद्यपि रोगी तथा रोग को देख–परखकर रोग की साध्या–साध्यता तथा आसन्न मृत्यु आदि के जान हेतु चरस संहिता, सुश्रुत संहिता, भेल संहिता, अष्टांग संग्रह, अष्टांग ह्रदय, चक्रदत, शारंगधर, आात प्रकाश, माधव निदान, योगरत्नाकर तथा कश्यपसंहिता आदि आयुर्वेदीय ग्रन्थों में अनेक सूत्र दिये गए हैं परन्तु रोगी या किसी भी व्यक्ति की आयु का निर्णय यथार्थ रूप में बिना ज्योतिष की सहायता के संभव नहीं है।

*व्याख्याता
हिन्दी विभाग
बी.बी. डी राजकीय महाविद्यालय
चिमनपुरा, शाहपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. डॉ. सुरेन्द्र कुमार, ऋग्वेद में विविध विधाएँ, पृ. 101
2. डा. कपिल देव द्विवेदी, वेदों में आयुर्वेद, प. 38
3. वह राक्षस के साथ अपामि के समान हो, ऋग्वेद 9/85/1
4. यदि वासना से, इच्छाहीनता से, हृदय से, परि का जन्म होता है। अथर्ववेद 9/8/8
5. तीन भयानक बीमारियों की तरह. वाल्मिकी रामायण, उत्तरकाण्ड 5/7
6. रोग दो प्रकार के होते हैं, शारीरिक और मानसिक। महाभारत, शांतिपर्व (राजधर्मानुशासन) 16/8.
7. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश (प्रथम भाग), प. 402
8. प्राणो मृत्यु प्राणस तक्मा। अथर्ववेद 11/4/1
9. आप राजा वरुण के पुत्र हैं। अथर्ववेद 1/25/3
10. क्योंकि यह शरीरोंमें से पहिला शरीर है। चरक संहिता (भाग 1), निदानस्थान 1/1
11. यह शरीर, इंद्रियों और मन को कष्ट देता है, बुद्धि, बल, रंग, खुशी और उत्साह को कम करता है और थकान, भ्रम और खाने में बाधा उत्पन्न करता है। वही 1/35